

DPN 5874

Title : ज्योतिष वलिमाला Jyotiṣa VALI MĀLĀ

Run. No. 6565

Cat. No.

Micro. No.

Subject ज्योतिष Astrology

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपाल भाषा निर्देश, यसमा नया
newa direction & holy-
place names.

Size in cms. 25.5 x 8

Folios 12

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

प्रमोद रत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Pranindar Ratan Vajracarya

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Stray प्रकीर्ण

Beginning, colophon, post-colophon :

५६.

ज्योतिष
वलिमाला

प्रशान्दरत्न वज्राचार्य

ॐ अ ह अ उ स अ सौ योग सर्वसिद्धि मिं धुती रास मन्तुरो कमुल
 आ म वि अ अ पु र धां क्षयो उगु कर्म म अश्रु भी ॥ ॥ आसु न फ
 पु य सा म म उ क के नु क्षोज सौर यम गुन माद्य वैसा य धुति
 ति उ वि पु ध अ आ जी वत्स वास्तु सर्व कर्म रास स्वर्ग मुर अश्रु भी ॥
 अ ह अ उ स अ म वजु धन नास म मुर पुथ म पाद दघटि १५

म वि अ अ पु र आ मु र म य दाता म यति हं ता ॥ ॥ मुर दुति
 पु सा म म उ क पु क्षत्र कषिकर्म मिं य पाद दघटि ३० मा त ह ता
 उ वि पु ध अ आ ति मित्र सर्व कर्म मिं ॥ ॥ मुर तृतीय पाद दघटि
 ह अ उ स अ म अ मानस अ मिष्टं मिं ४५ धरा ह ता ॥ ॥ मुल
 वि अ अ पु र आ म पद्माक्ष सर्वसिद्धि मिं वरुण पाद दघटि ६० अश्रु

सा मू७ उ क पू यू रं व क म्बुमं म फलं॥ • ॥ घटि ८ हास म्
 वि पू ध प्र आ षा उ उत्पात रि यु भय म म व वु म्बु सर्वनास॥ •
 अ उ स अ म्बु ह म्बु म्बु नय म ॥ घटि ९ दल श द्वन हा
 अ अ पू रु आ म वि का रौ ह जे कार्यनास म नि॥ • ॥ घटि १० खो रा श दा
 मू७ उ क पू यू सा सिद्धि सर्वसिद्धि भिं शू की जा वि नास॥ • ॥ घटि

यु ध प्र आ षा उ वि भु म जात्र दी भिं एक वास मा म मही क॥
 उ स अ म्बु ह अ म्बु त सर्वकर्म भु मं भिं • ॥ घटि ११ हर श पति वा
 अ पू रु आ म वि अ मु स त सर्वनास म ल म दु॥ • ॥ घटि १२ वु श रा
 मू७ उ क पू यू सा म ग द र वा कर ह म जाया म कि श्र यु ज ग न य
 ध प्र आ षा उ वि यु मा ते ग गज क र्म भिं नाय क जु यु ज॥ • ॥ घटि

नमो भगवते वासुदेवाय

॥ काहीक शुक्र दसि प्रवती नरु वृद्ध वाव हनिवास ॥ ० ॥ ॥ अदि
खया साडा काड वरु सिऊ मनि मावासा ॥ ० ॥ ॥ वैड सा मया उयूहाम
कुयू वरु संव हन संख ॥ ० ॥ अंगत्रया युका काड वरु पून पून थुसा ॥ ०
॥ वृद्धया का कासु वरु युपा ना मधि ॥ ० ॥ ॥ वृहस्पतिया नका का
सुवम सु ॥ ० ॥ ॥ सुकया कयगु कुयू वरु डीरु मूठ सत्र ॥ ० ॥ सनी

अत्रया मास डीव वरु कयीन नीव कयगुसा ॥ ० ॥ ॥ नाहया माट हाक्
वरु फ्रन नाडा वरु ॥ ० ॥ ॥ कगुया कात्र यवे वरु पायस कलंक टं या
व ॥ ० ॥ ॥ आख कुयू वरु सिंधा सं डव मया ॥ ० ॥ ॥ धूनीनडा गुरु वायगु इत्र
अमाद्यरु नदायनि वागमनि संगम साधन निर्य नाग टक क वर्लू कासु ॥ ० ॥ ॥ एक
मादायनि वागमनि संगम सांन निर्य नाग सिखी नाग वर्लू कुयू ॥ गुकसु

* काड २

२४६८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

मनित्रादिनी वागमनी संगम संकत्रकिथ नाग संषपात्र वर्धु युयू ॥ संवमा द
वाजमंदवि वागमनि संगम वाजकिथ नाग सूत्रामनि वर्धु ॥ वाजकिथ
वित्रमावनि कसावनि संगम मत्रावथकिथ नाग कुत्रीक वर्धु युयू ॥ नाखाद्व
कुसमावनी कसावनि संगम नीमत्रकिथ नाग अयत्रा कन वर्धु ॥ रुवाषुसी
सुवर्धुमनि कसावनि संगम नीखानकिथ नाग कुत्रिक वर्धु ॥ त्रषुटिथ

५६. ज्योतिष बलिमाला

फराणीन्दरल वज्राचार्य

पायनासनि कसावति संगम गगनतिथि नाग वासुकि वर्धु रुय ॥ कद वृसि
 वागमनी कसावति संगम चिनामनीतिथि नाग वन वर्धु रुय ॥ न वृहा ॥
 जलमति वर्गमनी संगम प्रसादतिथि नाग पद्म वर्धु ॥ दानाग
 यात्रमति वागमटी संगम सूत्रकनटिथि नाग महापद्म वर्धु क्रास ॥ चारु का
 पुलावनी वागमटी संगम जयतिथि नाग कर्काटक वर्धु ॥ न वृहा

धनवनामा
 हां न भाग्या वज्रसत्वाय ॥ धन वलिरावना ॥ हां की ॥ अचमनं पनिक स्वाहा
 ॥ गंगा यं कात्रन वायू मधुलं नदू पलि वंजा न अग्नि मधु वं न गुरु क आका
 वजं जि ट पप्रराजनं मूधुगि न य वलि काया यावस्मि नं ॥ न गुरु कादि
 पलि प्लि टं ॥ उं वूं ॥ हां किं खं हूं वां मां पां नां वूं ॥ उं कास ज दधि स्मि नं पचा म
 न पंचपदि पलू प न निष पाद्य ॥ उं आ ॥ हूं ग नू उ मू दा या धि स्मि नं ॥ आ क

* कौ २

पात्रा मूलां दस्युः ॥ ० ॥ वलिससस्मानवाय ॥ ० ॥ ॐ ॐ न्द्राय स्वाहा ॥
 ॐ ऊ माय स्वाहा ॥ ॐ वेवू नाय स्वाहा ॥ ॐ कू वलाय स्वाहा ॥ ॐ अग्निय स्वाहा
 ॥ ॐ नेत्राय स्वाहा ॥ ॐ वायू वा स्वाहा ॥ ॐ ॐ सा नाय स्वाहा ॥ ॐ उर्ध्व वक्त्र नस्व
 हा ॥ ॐ सूर्या ग्रहाधिपठिय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्रानक्षत्राग्रहाधिपकय स्वाहा ॥
 ॐ अर्थपृथिवस्वाहा ॥ ॐ नागवैश्वस्वाहा ॥ ॐ असुरस्य स्वाहा ॥ ॐ सर्वदिग

दमादिगत्राकपात्राख्यस्यारु॥ ० ॥ ॐ ॥ अदिवडसहदवसंधे यिमंच
गद्रुवलिविहित. अग्रेडमने ॐ सरुपनीचज्जवं पटिवायूधनाधी
पशु ॐ सानरुगाधियपतिवदवा उधेचडाकपिठामरुसा. दवासमसा
रुवदचनागम. धत्राधत्रागुष्ठागने समसा. पटिपटि ह्यकन. वदयनु
स्यकध्रुकाश्चेवदि सासरुटा. नगद्रुगुष्ठा. सवनाससिन्धा ४ सयो रुमके

विनिकपात्रमात्रमात्रीन्नाख्यद्वागमत्रमहद्धिः खड्गदुस्सायत्रसूदुस्सावज्जदुस्साधन
कथा महासूर्य महावज्र वज्रधर्म समाधि पर्वे जकीनी महाठल सर्वकामान
सहनं जागमद्युत्र महाजागी वज्रध्वनी पुत्रुपि कथा न था गट महाकाय निब
जन आगिनिष्ठ ता ४ द व जन महाबाहन आवाहन सर्व सिद्धि नाँ उँ क क कंध
नं ववबंधन खखखंधन दानपटि र सर्वदूषणी क्षाटि कु बूषिंकु बूदुदुदुदुदुदु